बनाम जन

नज़ीर अकबराबादी का महत्त्व

बनास जन

साहित्य-संस्कृति का संचयन

नज़ीर अकबराबादी का महत्त्व

परामर्श : प्रो. काशीनाथ सिंह, वाराणसी
डॉ. ममता कालिया, दिल्ली
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, जयपुर
प्रो. माधव हाड़ा, उदयपुर
श्री महादेव टोप्पो, राँची

सम्पादक : पल्लव

सहयोग : गणपत तेली, भँवरलाल मीणा

कला पक्ष : निकिता त्रिपाठी

सहयोग राशि : 40 रुपये (यह अंक)–डाक द्वारा मँगवाने पर–65 रुपये
80 रुपये (संस्थागत)–डाक द्वारा मँगवाने पर–105 रुपये
6000 रुपये–आजीवन (व्यक्तिगत)
10,000 रुपये–आजीवन (संस्थागत)

समस्त पत्र व्यवहार : पल्लव
393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एंड डी
कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
ह्वाट्सअप : +91–8130072004 (केवल लिखित संदेश हेतु)
ई-मेल : banaasjan@gmail.com
वेबसाइट : www.notnul.com

कृपया रचनाएँ भेजने के लिए सिर्फ ई-मेल का उपयोग करें। आग्रह है कि इस संबंध में पूछताछ न करें। 'बनास जन' में सभी रचनाओं का स्वागत है।

नोट : प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
संपादन एवं सह संपादन पूर्णतः अवैतनिक।
समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली न्यायालय होगा।

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक पल्लव द्वारा 393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एण्ड डी, कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 से प्रकाशित और प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, झिलमिल इंडस्ट्रीयल एरिया, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095 से मुद्रित।

BANAAS JAN
Peer Reviewed Journal
(A Collection of Literature)

ISSN 2231–6558

अनुक्रम

अपनी बात	4
प्रस्तावना	5
उत्तर रीतियुगीन भारतीय समाज और नज़ीर अकबराबादी	7
रीतियुगीन हिंदी-उर्दू काव्य परिदृश्य और नज़ीर	20
सन्त-सूफ़ी काव्य परम्परा और नज़ीर की कविताई	37
नज़ीर की कविता : काव्य-भाषा और काव्य-रूप की नयी जमीन	53

अपनी बात

नज़ीर अकबराबादी पर युवा अध्येता निवेदिता प्रसाद के इस लम्बे विनिबंध को विशेष अंक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। इस विशेषांक का एक प्रसंग यह भी है कि यह नवल किशोर स्मृति सम्मान अंक के रूप में आ रहा है।

हिन्दी साहित्य और संस्कृति की पत्रिका बनास जन ने विख्यात आलोचक प्रो. नवल किशोर की स्मृति में आलोचना सम्मान प्रदान करने का निर्णय लिया है। वर्ष 2024 से प्रारम्भ यह सम्मान बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की युवा अध्येता निवेदिता प्रसाद को उनके विनिबंध 'नजीर अकबराबादी का महत्त्व' पर दिया जाएगा। सम्मान के लिए गठित निर्णायक समिति के सदस्यों प्रो. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल (जयपुर), प्रो. माधव हाड़ा (उदयपुर) और संयोजक प्रो. मलय पानेरी (उदयपुर) ने सर्वसम्मति से निवेदिता प्रसाद की पांडुलिपि का चयन किया।

सम्प्रति काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में टीच फॉर बी एच यू फेलो के रूप में कार्यरत डॉ. निवेदिता प्रसाद का जन्म 25 मार्च 1995 को बलिया में हुआ था। प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कलकत्ता से स्नातक तथा दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से हिंदी साहित्य में स्नातकोत्तर के बाद उन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी से पीएच.डी की उपाधि ग्रहण की। नज़ीर अकबराबादी पर उनके विनिबंध पर अपनी संस्तुति में प्रो. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल ने कहा कि निवेदिता का अध्ययन नजीर अकबराबादी का उर्दू अदब के शायर के रूप में ही मूल्यांकन नहीं करता बल्कि हिंदी कविता के विकास की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी के रूप में नजीर को चिह्नित किये जाने का सार्थक प्रयास करता है। प्रो. हाड़ा ने अपनी संस्तुति में कहा कि उत्तर रीतियुगीन भारतीय समाज के संदर्भ में नजीर का अध्ययन इस विनिबंध को विशिष्ट बनाता है।

उक्त सम्मान के लिए परामर्श समिति के संयोजक और श्रमजीवी कालेज में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रो. मलय पानेरी ने बताया कि आलोचना के क्षेत्र में अपने अविस्मरणीय योगदान के लिए प्रो. नवल किशोर को जाना जाता है। उनकी स्मृति को स्थाई रखने के लिए इस सम्मान को प्रारम्भ किया गया है जिससे युवा अध्येताओं को भी नया मंच मिल सकेगा।

×××

आशा है पाठकों को यह अंक पसंद आएगा। निर्णायकों का आभार और निवेदिता जी को हार्दिक बधाई।

पल्लव

प्रस्तावना

नज़ीर अकबराबादी रीतिकाल के उत्तरार्द्ध में उभरते हुए हिन्दुस्तान के एक ऐसे शायर रहे हैं, जिनकी लेखनी में आम-जनमानस की जिन्दगी का अक्स पूरी सहजता, सरलता और स्वाभाविकता के साथ अपनी उपस्थिति दर्ज करवाता है। स्वाभाविकता, इस अर्थ में कि नज़ीर जब सामान्य जन-जीवन की के ब्यौरे को क़लमबद्ध करते हैं तो उनकी जिन्दगी के कमोबेश हर पहलू को छूते हुए गुजरते हैं। वहाँ हर्ष-उल्लास है तो दुःख-विषाद भी है, उमंग और खिलखिलाहट है तो उदासी और रुदन भी है, मनुष्य की अच्छाईयाँ हैं तो उनके ऐब भी जाहिर हैं। वहाँ जिन्दगी के संघर्ष और जद्दोजहद हैं, लोगों की चालाकियाँ हैं, लड़ाई-झगड़े हैं, राग-द्वेष हैं। नज़ीर की क़लम के दायरे में सिर्फ मनुष्य या चेतन जगत् ही नहीं समाहित है, वरन् नज़ीर ने अचेतन वस्तुओं को भी अपनी कविताओं की विषय-वस्तु बनाया है। नज़ीर के यहाँ जीवन-जगत् के तमाम शेड्स अपनी आभा के साथ मौजूद हैं।

नज़ीर अकबराबादी 18 वीं सदी के प्रमुख कवियों में से एक हैं। ऐसा नहीं है कि वे सिर्फ उर्दू अदब के शायर हैं, बल्कि हिंदी कविता के विकास की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी के रूप में नज़ीर को चिह्नित किये जाने की जरुरत है। दरअसल, उर्दू अदब में भी नज़ीर लम्बे अर्से तक उपेक्षित ही रहे और जब उन्हें स्वीकृति मिली, तब भी नज़ीर को वह ओहदा नहीं हासिल हो सका जिसके वह वास्तविक हकदार थे। हिंदी जगत में भी नज़ीर को ठीक से जाँचा-परखा नहीं गया। शमशेर बहादुर सिंह ने 'दो आब' में यह उल्लिखित किया है कि हिंदी में नज़ीर की उपेक्षा का कारण एक-दूसरे के प्रति सांस्कृतिक भिन्नताजनित विराग है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल विरचित 'हिंदी साहित्य का इतिहास' और बच्चन सिंह कृत 'हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास' में नज़ीर का जिक्र आता है, बावजूद इसके हिंदी जगत में नज़ीर का यथोचित मूल्यांकन नहीं हो सका है; जबकि भाषा (खड़ी बोली हिंदी का वह रूप जो आगरा की आस-पास बोली जाती थी), विषय-वस्तु और भारतीय मानस की सांस्कृतिक चेतना की दृष्टि से हिंदी कविता के विकास में भी नज़ीर की लेखनी विस्तृत मूल्यांकन की मांग करती है।

नज़ीर को उनके दौर के समकालीन हिंदी और उर्दू कवियों के बरक्स रखकर मूल्यांकित नहीं किया गया है। नज़ीर की कविता को सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों के आलोक में देखने-परखने का प्रयास तो हुआ है लेकिन रीतिकाल के उत्तरार्द्ध दौर में नज़ीर कैसे अन्य रचनाकारों से अलग अपनी जमीन तैयार करते हैं, इसकी कहीं कोई पड़ताल नहीं दिखती है। साथ ही नज़ीर की कविताओं में सन्त-सूफ़ी काव्य-परंपरा का गहरा प्रभाव है। उनकी कविताओं का एक बड़ा हिस्सा इस चेतना से संचालित है लेकिन अब तक कहीं भी नज़ीर की कविता को इस परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित करने की कोशिश नहीं की गयी है। नज़ीर की कविता को इस आलोक में भी देखा जा सकता है। उर्दू साहित्य में नज़ीर की उपेक्षा की तमाम वजहों में एक बड़ी वजह थी, उनकी 'भाषा'। उर्दू में तो हमेशा से ही भाषा को कविता के ऊपर तरजीह दी गयी है। ऐसे में नज़ीर, जिन्होंने आगरा के आस-पास के गली-कूचों और बाजारों में